



TATTVA BODH

By : Jain Hemant Lodha

Tattva Bodh

Author – Jain Hemant Lodha

© Copyright All rights reserved

It would be my pleasure to give permission to reproduce or transmit any part of the book, in any form or by any means.

Author

Hemant Lodha

Mobile: 9325536999

Email: lodhah@gmail.com



<https://www.facebook.com/lodhah>



<https://www.linkedin.com/in/hemantclodha/>



<https://www.instagram.com/hemantlodha/>

Published by

Self Published

ISBN: -----

Not For Sale

Tattva Bodh: An Introduction

Tattva Bodh, meaning “The Knowledge of Truth,” is a foundational text in Vedantic philosophy that offers profound insights into the nature of reality and the self. Composed by the revered sage Adi Shankaracharya, it serves as a primer for understanding the core concepts of Vedanta, presenting complex spiritual truths in a simple, accessible manner.

At its heart, Tattva Bodh explains the distinction between the Self (Atman) and the non-Self (Anatman), guiding the aspirant towards self-realization and liberation (Moksha). It outlines the three bodies (gross, subtle, and causal), the five sheaths (Koshas), and the significance of the fourfold qualifications (Viveka, Vairagya, Shatsampatti, and Mumukshutva) required for spiritual liberation.

The text provides a roadmap for the seeker, emphasizing the discrimination between the real and the unreal, and highlights the importance of meditation, self-inquiry, and the study of scriptures to attain true knowledge. As an introduction to the profound teachings of Vedanta, Tattva Bodh serves as a stepping stone for anyone looking to embark on the spiritual path of enlightenment.

Forward by Hemant Lodha

As we traverse the journey of life, questions surrounding our true nature and the purpose of existence often arise. Tattva Bodh offers timeless wisdom, not merely as a philosophical text, but as a guide to self-realization. The teachings in this text are profound yet simple, providing seekers with the tools needed for deep spiritual inquiry and awakening.

Through the lens of Tattva Bodh, we learn that the ultimate truth is not something external to us but resides within. This knowledge of self, when realized, has the power to transform our perceptions and lead us toward lasting peace and fulfillment.

In the modern world, amidst distractions and challenges, the relevance of these teachings remains profound. They serve as a reminder of the unchanging truth of our existence and the path to freedom from suffering. This text is not just for those seeking spiritual liberation but for anyone looking to deepen their understanding of life, its purpose, and the true essence of being.

As part of my contribution, I have composed Haiku and Tanka, poetic forms that distill profound spiritual insights into brief, yet impactful expressions. Haiku, a traditional Japanese form, consists of three lines with a 5-7-5 syllable structure, capturing a moment of reflection. Tanka, another form of Japanese poetry, is a five-line composition with a 5-7-5-7-7 syllable structure, allowing for a deeper, more expansive reflection.

May this offering of Tattva Bodh illuminate the path for all who seek the eternal truth and inspire the pursuit of a life grounded in wisdom, peace, and love.

Hemant Lodha

Director, SMS Ltd.

Blogger, Writer, Poet, Seeker, TEDx Speaker, Mentor, Scripture Translator

INDEX

Sr. No.	Name	Page No.
Chapter-1	साधनचतुष्टय Fourfold Qualification	1-17
Chapter-2	तत्त्व विवेक Enquiry into the truth	18-21
Chapter-3	तीन शरीर Three Bodies	22-50
Chapter-4	अवस्थात्रय The Three States	51-56
Chapter-5	पँच कोष The Five Sheaths	57-65
Chapter-6	आत्मा The Nature of the Self	66-71
Chapter-7	जगत व माया The Universe & Maya	72-100
Chapter-8	जीव और ईश्वर Self & Lord	101-106
Chapter-9	तत् त्वम् असि TAT TWAMASI	107-114
Chapter-10	जीवन मुक्त Liberated While Living	115-121
Chapter-11	कर्म Actions	122-126
Chapter-12	कर्म बंधन से मुक्ति Freedom From Bondage	127-136

1. साधनचतुष्टय

Fourfold

Qualification

**मोक्ष के साधन के रूप में चार गुणों का
होना आवश्यक है।**

**The four fold qualification is
means of liberation.**

नित्यानित्यवस्तुविवेकः। 1.1.1

भेद विज्ञान
नित्य अनित्य ज्ञान
वही विवेक।

नित्य और अनित्य वस्तु का जो यथावत्
ज्ञान है, उसको विवेक कहते हैं।

**The capacity to discriminate
between the permanent and the
impermanent is called Viveka.**

इहामुत्रार्थफलभोगविरागः। 1.2.2

फल अनिच्छा
लोक परलोक में
वही विराग।

लोक परलोक में कर्म फल के भोग के
त्याग को विराग कहते हैं।

**Dispassionate to the enjoyment
of fruits of one's actions here and
hereafter.**

शमादिषट्कसंपत्तिः। 1.3.3

छह संपत्ति
शम दम आदि है
तीजा साधन।

शमादि (शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, और समाधि) इन छह गुणों की सम्पत्ति को शमादिषट्कसंपत्ति कहते हैं।

The attainment of the six virtues (Shama, Dama, Uparati, Titiksha, Shraddha, and Samadhi) is called the six-fold wealth (Shamaadi Shatka Sampatti).

मुमुक्षुत्वं चेति। 1.4.4

मोक्ष कामना
चौथा साधन यही
मुमुक्षुत्व ही।

मुमुक्षुत्व का अर्थ है मोक्ष की प्राप्ति की
तीव्र इच्छा या आकांक्षा।

**Mumukshutva refers to the
intense desire or longing for the
attainment of liberation
(moksha).**

नित्यवस्तुवेकं ब्रह्म तद्व्यतिरिक्तं
सर्वमनित्यम्। अयमेव
नित्यनित्यवस्तुविवेकः। 1.5.5

ब्रह्म ही नित्य
बाकी सब अनित्य
यही विवेक।

नित्य ब्रह्म ही एकमात्र स्थायी सत्य है,
और इसके अलावा सब कुछ अनित्य है।
यही नित्य और अनित्य के बीच विवेक
है।

**The eternal Brahman is the only
permanent reality, and everything
else apart from it is impermanent.
This is the discrimination between
the eternal and the non-eternal.**

इहस्वर्गभोगेषु इच्छाराहित्यम्। 1.6.6

भोगों का त्याग
लोक या परलोक
वहीं विराग।

स्वर्ग के भोगों में इच्छाएँ न होने को
इच्छारहितता कहते हैं।

**In the enjoyment of heavenly
pleasures, the absence of desire is
called desirelessness.**

शमो दम उपरमस्तितिक्षा श्रद्धा समाधानं
च इति। 1.7.7

छः सम्पत्तियां
शम दम उपरम
तितिक्षा श्रद्धा
साथ में समाधान ।
यही सार्थक जान ।

शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, और
समाधि ये छह गुण हैं।

**Shama, Dama, Uparati, Titiksha,
Shraddha, and Samadhi are the
six virtues.**

मनो निग्रहः शम। 1.8.8

**शम का अर्थ
संकल्प विकल्प से
मन रोकना।**

मन का वश में करना शम है।

Shama is the control of the mind.

चक्षुरादिबाह्येन्द्रियनिग्रहः दमः। 1.9.9

दम का अर्थ
चक्षु आदि इन्द्रियाँ
विषय दूर।

आंख और अन्य बाह्य इंद्रियों का वश में
करना दम है।

**Dama is the control of the
external senses, such as the eyes
and others.**

स्वधर्मानुष्ठानमेव उपरम। 1.10.10

**उपरम है
स्वधर्म अनुष्ठान
निज सम्पत्ति।**

स्वधर्म का पालन करना उपरति है।

**Uparati is the performance of
one's own duty (Swadharma).**

शीतोष्णसुखदुःखादिसहिष्णुत्वम्
तितिक्षा। 1.11.11

तितिक्षा तभी
शीतोष्ण सुख-दुख
एक समान।

शीत, उष्ण, सुख, दुःख आदि को सहन
करना तितिक्षा है।

**Titiksha is the endurance of cold,
heat, pleasure, pain, and similar
experiences.**

Shraddha

गुरुवेदांतवाक्यादिषु विश्वासः श्रद्धा।

1.12.12

मोक्ष का हेतु
गुरु वेद कथन
है श्रद्धा यही।

गुरु और वेदांत के वाक्यों में विश्वास
करना श्रद्धा है।

**Shraddha is the faith in the words
of the Guru and the teachings of
Vedanta.**

चित्तैकाग्रता समाधानं। 1.13.13

चित्त एकाग्र
समाधान करता
मोक्ष का हेतु।

शम, दम, उपरम, तितिक्षा व श्रद्धा को
उद्धार का हेतु जानकर चित्त को एकाग्र
करना ही समाधान है।

**Samadhi is the concentration of
the mind.**

मोक्षो मे भूयाद् इति इच्छा। 1.14.14

मुमुक्षता है
केवल मोक्ष इच्छा
चौथा साधन।

मोक्ष की प्राप्ति की इच्छा ही मुमुक्षता है।

**The desire for the attainment of
liberation (moksha) is called
Ichha.**

ततस्तत्त्वविवेकस्याधिकारिणो भवन्ति।

1.15.15

चार साधन
अन्तःकरण शुद्धि
हो तत्त्व ज्ञानी।

इन चार साधनो से अन्तःकरण की शुद्धि
कर जिज्ञासु तत्त्व ज्ञान का अधिकारी
होता है।

Thus, those who practice the
discrimination of truth (Tattva
Viveka) become fit for it.

2. तत्त्व विवेक

Enquiry into the truth

आत्मा सत्यं तदन्यत् सर्वं मिथ्येति।

2.1.16

आत्मा ही सत्य
बाक़ी सब है मिथ्या
यही विवेक।

आत्मा सत्य है, और उससे अलग सब
कुछ मिथ्या है।

The Atman is the truth, and
everything else apart from it is
false.

स्थूलसूक्ष्मकारणशरीराद्यतिरिक्तः
पञ्चकोशातीतः सन् अवस्थात्रयसाक्षी
सच्चिदानन्दस्वरूपः सन् यस्तिष्ठति स
आत्मा। 2.1.17

स्थूल व सूक्ष्म
कारण शरीर से
है भिन्न आत्मा।

पाँच कोष से
तीन अवस्था से
है भिन्न आत्मा।

सच्चिदानन्द
स्वरूप प्रकाशित
है यही आत्मा ।

**स्थूल, सूक्ष्म, कारण और शरीर से अलग,
पञ्चकोशों के परे, तीनों अवस्थाओं का
साक्षी, सच्चिदानन्द स्वरूप में स्थित वही
आत्मा है।**

**The Atman, beyond the gross,
subtle, and causal bodies,
transcending the five sheaths
(koshas), is the witness of the
three states (waking, dreaming,
and deep sleep),**

3. तीन शरीर Three Bodies

स्थूल शरीर - Gross Body

पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं
सुखदुःखादिभोगायतनं शरीरं, अस्ति जायते
वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यतीति
षड्विकारवदेतत्स्थूलशरीरं। 3.1.18

सत्कर्म फल
पञ्चीकृत भूत है
स्थूल शरीर।

मन निवास
सुख दुख भोगता
स्थूल शरीर।

जन्म मरण
बाढ़ युवा व वृद्ध
स्थूल शरीर।

पंचीकृत महाभूतों से उत्पन्न हुआ,
सत्कर्मों का फल, जिस में रहकर मन
सुख दुख को भोगता है, जिसके छह
विकार हैं- है, जन्मता है, बढता है, युवा
होता है, वृद्ध होता है और नाश होता है,
इसे स्थूल शरीर कहते हैं।

The gross body, made of the five elements, is the seat of enjoyment of the fruits of good deeds, experiencing pleasure and pain. It undergoes six transformations: birth, growth, change, decay, and destruction, and is called the gross body (Sthula Sharira).

सूक्ष्म शरीर - Subtle Body

अपञ्चीकृतपञ्महाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं
सुखदुःखादिभोगसाधनं पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि
पञ्चकर्मेन्द्रियाणि पञ्चप्राणादयः मनश्चैकं
बुद्धिश्चैका एवं सप्तदशाकलाभिः सह यत्तिष्ठति
तत्सूक्ष्मशरीरम्। 3.2.19

सत्कर्म फल
अपञ्चीकृत भूत
सूक्ष्म शरीर।

सुखदुखादि
है भोग का साधन
सूक्ष्म शरीर।

पञ्च ज्ञानेंद्री
हो पञ्च प्राण संग
पञ्च कर्मेद्री

मन व बुद्धि सत्रह कलाओं का सूक्ष्म शरीर।

अपंचीकृत महाभूत अर्थात् जिनका पंचीकरण नहीं हुआ (तन्मात्राएँ), सत्कर्म के कारण उत्पन्न हुआ, सुख दुख आदि भोगों का साधन, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच प्राण, मन व बुद्धि ऐसे १७ कलाओं को सूक्ष्म शरीर कहते हैं।

The subtle body (Sūkṣma Śarīra) consists of the unmanifested five elements and is the instrument for experiencing the fruits of good deeds. It includes the five sense organs (jñānendriyas), the five organs of action (karmendriyas), the five vital forces (prāṇas), the mind, and the intellect, along with all 17 elements.

ज्ञानेन्द्रियाँ - Senses

श्रोत्रं त्वक् चक्षुः रसना घ्राणम् इति पञ्च
ज्ञानेन्द्रियाणि। 3.3.20

कर्ण व त्वचा
चक्षु, रसना, घ्राण
पाँच ज्ञानेन्द्रि।

श्रवण, स्पर्श, दृष्टि, स्वाद और गंध ये पाँच
ज्ञानेन्द्रियाँ हैं।

The five sense organs are hearing
(ear), touch (skin), sight (eyes),
taste (tongue), and smell (nose).

श्रोतस्य दिग्देवता। 3.4.21

दसो दिशा में
श्रोत का है देवता
ॐकार नाद।

श्रवणेंद्रिय की देवता दिशाएँ हैं।

**The deity of the ear (shrotra) is
the directions.**

त्वचो वायुः। 3.5.22

वायु को जाने
त्वचा इन्द्रि का देव
है स्पर्श गुण ।

त्वचा का देवता वायु है।

**The deity of the skin (tvak) is the
wind (vayu).**

चक्षुषः सूर्यः। 3.6.23

**सूर्य को जाने
चक्षुओं का देवता
रूप दिखावे।**

चक्षु का देवता सूर्य है।

**The deity of the eyes (chakshu) is
the Sun (Surya).**

रसनाया वरुणः। 3.7.24

**रस देवता
वरुण को जानना
स्वाद करावे।**

रसना का देवता वरुण है।

**The deity of the tongue (rasana)
is Varuna.**

घ्राणस्य अश्विनौ। 3.8.25

**घ्राण देवता
अश्विनी कुमार है
गंध सुँघायें।**

घ्राणेंद्रिय का देवता अश्विनीकुमार हैं।

**The deities of the nose (ghrāṇa)
are the Ashvins (the twin Vedic
gods).**

श्रोतस्य विषयः शब्दग्रहणं। 3.9.26

कर्ण विषय
शब्द ग्रहण करे
सूक्ष्म शरीर।

श्रवणेंद्रिय का विषय शब्द है, अर्थात् यह
शब्दों को ग्रहण करता है।

**The subject of the ear (shrotra) is
sound, i.e., it perceives sound.**

त्वचो विषयः स्पर्शग्रहणम्। 3.10.27

**त्वचा विषय
स्पर्श ग्रहण करे
सूक्ष्म शरीर।**

**त्वचा का विषय स्पर्श है, अर्थात् यह
स्पर्श को ग्रहण करती है।**

**The subject of the skin (tvak) is
touch, i.e., it perceives tactile
sensations.**

चक्षुषो विषयः रूपग्रहणम्। 3.11.28

**चक्षु विषय
रूप ग्रहण करे
सूक्ष्म शरीर।**

**चक्षु का विषय रूप है, अर्थात् यह रूप
को ग्रहण करता है।**

**The subject of the eyes (chakshu)
is form, i.e., it perceives visual
appearances.**

रसनाया विषयः रसग्रहणम्। 3.12.29

**रस ग्रहण
रसना का विषय
सूक्ष्म शरीर।**

**रसना का विषय रस है, अर्थात् यह स्वाद
को ग्रहण करती है।**

**The subject of the tongue
(rasana) is taste, i.e., it perceives
flavors.**

घ्राणस्य विषयः गंधग्रहणम् इति।

3.13.30

गंध ग्रहण
नासिका का विषय
सूक्ष्म शरीर।

घ्राणेंद्रिय का विषय गंध है, अर्थात् यह
गंध को ग्रहण करता है।

The object of the nose (ghrāṇa) is
smell, i.e., it perceives odors.

कर्मेंद्रियाँ - Organs of Actions

वाक्पाणिपादपायूपस्थानीति
पञ्चकर्मेंद्रियाणि। 3.14.31

कर्मेंद्रियाँ है
वाणी हाथ व पाँव
लिंग व गुदा।

वाक, पाणि, पाद, आयु और उपस्थ ये
पाँच कर्मेंद्रियाँ हैं।

The five organs of action
(karmendriyas) are speech (vāk),
hands (pāṇi), feet (pāda),
excretion (āyū), and reproduction
(upastha).

वाचो देवता वह्निः। 3.15.32

अग्नि को जाने
वाणी का देवता है
शब्द रचना।

वाकेंद्रिय की देवता अग्नि है।

The deity of the speech (vāk) is
Agni (the fire god).

हस्तयोरिन्द्रः। 3.16.33

**इन्द्र को जाने
हाथों का देवता है
कर्म करावें।**

हस्तों के देवता इन्द्र हैं।

**The deity of the hands (hastayoh)
is Indra.**

पादयोर्विष्णुः। 3.17.34

विष्णु को जाने
पाँवों का देवता है
गमन करे।

पैरों के देवता विष्णु हैं।

**The deity of the feet (pādayoḥ) is
Vishnu.**

पायोर्मृत्युः । 3.18.35

मृत्यु को जाने
है गुदा का देवता
मल निकालें।

पायु के देवता मृत्यु हैं।

**The deity of the excretory organ
(pāyu) is Yama (the god of death).**

उपस्थस्य प्रजापतिः। 3.19.36

**प्रजापति है
है लिंग का देवता
वंशवर्धन।**

उपस्थ के देवता प्रजापति हैं।

**The deity of the generative organ
(upastha) is Prajapati.**

वाचो विषयः भाषणम्। 3.20.37

**शब्द समझ
है वाणी का विषय
हो तत्त्व ज्ञान।**

**वाक्य का विषय भाषण है, अर्थात् यह
बोलने या संवाद करने से संबंधित है।**

**The object of speech (vāk) is
verbal communication, i.e., it is
related to speaking or expressing
through words.**

पाण्योर्विषयः वस्तुग्रहणम्। 3.21.38

वस्तु समझ
है हाथ का विषय
हो तत्त्व ज्ञान।

हाथों का विषय वस्तु को ग्रहण करना है,
अर्थात् यह किसी वस्तु को पकड़ने या
उठाने से संबंधित है।

**The object of the hands (pāṇi) is
the grasping of objects, i.e., it is
related to holding or taking
objects.**

पादयोर्विषयः गमनम्। 3.22.39

पाँव विषय
है गमनागमन
हो तत्त्व ज्ञान।

पैरों का विषय गमन है, अर्थात् यह चलने
या यात्रा करने से संबंधित है।

**The object of the feet (pāda) is
movement, i.e., it is related to
walking or traveling.**

पायोर्विषयः मल त्यागः। 3.23.40

**मल का त्याग
है विषय गुदा का
हो तत्त्व ज्ञान।**

**पायु का विषय मल त्याग है, अर्थात् यह
शरीर से अपशिष्ट को बाहर निकालने से
संबंधित है।**

**The object of the excretory organ
(pāyu) is the expulsion of waste,
i.e., it is related to the elimination
of bodily waste.**

उपस्थस्य विषयः आनंद इति। 3.24.41

आनन्द प्राप्ति
है लिंग का विषय
हो तत्त्व ज्ञान।

उपस्थ का विषय आनंद है, अर्थात् यह
सुख और प्रजनन से संबंधित है।

**The object of the generative
organ (upastha) is pleasure, i.e., it
is related to joy and procreation.**

कारण शरीर - Causal Body

अनिर्वाच्यानाद्यविद्यारूपं शरीरद्वयस्य
कारणमात्रं सत्स्वरूपाऽज्ञानं निर्विकल्पकरूपं
यदस्ति तत्कारणशरीरम्। 3.25.42

वह अव्यक्त
अनादि अविद्या भी
कारण मात्र
स्थूल सूक्ष्म शरीर का
दोनों का है आधार।

निर्विकल्प भी
सत्त्व की अज्ञानता
कारण तन।

“वह अव्यक्त, अनादि और अविद्या का रूप
है, जो केवल सत्त्व (अस्तित्व) की अज्ञानता
के रूप में है, बिना किसी विचार या कल्पना

के, वही कारण शरीर है। इसका तात्पर्य है कि दो प्रकार के शरीर (स्थूल और सूक्ष्म) का कारण केवल अविद्या या अज्ञान है, जो सच्चिदानंद (सत्ता, चेतना, और आनंद) के स्वरूप को नहीं जानता। यह अज्ञान निर्विकल्प रूप में है, यानी इसमें किसी प्रकार का भेद या विचार नहीं होता। इस अज्ञानता को 'कारण शरीर' कहा जाता है।”

**That which is ineffable,
beginningless, in the form of
ignorance, the mere cause of the
dual bodies (gross and subtle), the
ignorance of the true nature of the
self (in its undifferentiated form), is
called the causal body.**

4. અવસ્થાત્રય

The Three States

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थाः। 4.1.43

जान लीजिए
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति
अवस्था त्रय।

जाग्रत, स्वप्न, और सुषुप्ति ये तीन अवस्थाएँ
हैं।

The states of waking (jāgrat),
dreaming (svapna), and deep sleep
(suṣupti) are the three states of
consciousness.

श्रोत्रादिज्ञानेन्द्रियैः शब्दादिविषयैश्च ज्ञायते इति यत्
सा जाग्रदवस्था। स्थूल शरीराभिमानी आत्मा विश्व
इत्युच्येत। 4.1.44

विषय ज्ञान
श्रोतादि इन्द्रियों से
जाग्रदवस्था

स्थूल शरीर
स्व अभिमान वाले
विश्व कहिए।

“वह अवस्था, जिसमें श्रोत्र आदि ज्ञानेन्द्रियों द्वारा शब्द आदि विषयों का ज्ञान होता है, जाग्रत अवस्था कहलाती है। स्थूल शरीर के प्रति आत्म-अभिमान वाले आत्मा को ‘विश्व’ कहा जाता है।”

The state that is known through the sense organs like the ear (śrotra) and objects like sound is called the waking state (jāgrat). The Atman associated with the gross body is called the Universe (Vishva).

स्वप्नावस्था केति चेत् जाग्रदवस्थायां यद् दृष्टं यद्
श्रुतं तज्जनि तवासनया निद्रासमये यः प्रपञ्चः
प्रतीयते सा स्वप्नावस्था। सूक्ष्मशरीराभिमानी
आत्मा तैजस इत्यच्यते। 4.2.45

देखा या सुना
जाग्रत अवस्था में
वासना बड़ी
निद्रा में हो प्रपंच
स्वप्न अवस्था जान।

स्वप्नावस्था में, जाग्रत अवस्था में जो कुछ देखा
या सुना गया है, वह निद्रावस्था में वासनाओं के
कारण प्रपंच के रूप में प्रकट होता है। यह
स्वप्नावस्था कहलाती है। सूक्ष्म शरीर के साथ
संलग्न आत्मा तैजस कहलाता है।

In the dream state (svapna), the
impressions of what was seen or heard
in the waking state are perceived as an
illusion due to latent desires during
sleep. The Atman associated with the
subtle body is called Taijasa.

अहं किमपि न जानामि सुखेन मया
निद्राऽनुभूयत इति सुषुप्त्यवस्था। 4.3.46

आनन्द निद्रा
कुछ नहीं जानता
सुषुप्ति स्थिति

मैं कुछ भी नहीं जानता, मुझे आनंदपूर्ण
निद्रा का अनुभव हो रहा है" - यह वाक्य
सुषुप्ति अवस्था का वर्णन करता है।

**"I know nothing, and peacefully
experience sleep," this is the state
of deep sleep (sushupti).**

कारणशरीराभिमानी आत्मा प्राज्ञ
इत्युच्यते। 4.4.47

अभिमान हो
कारण शरीर का
है प्राज्ञ वही।

**The self identifying itself with
causal body is called “Prajna”.**

5. पँच कोष

The Five Sheaths

अन्नमयः प्राणमयः मनोमयः विज्ञानमयः
आनन्दमयश्चेति। 5.1.48

पंच कोश है
अन्न, प्राण, विज्ञान
मन आनन्द।

अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय,
और आनन्दमय पंचकोश होते हैं।

**Five sheaths are - Food, Vital air,
mental, intellectual and bliss.**

अन्नरसेनैव भूत्वा अन्नरसेनैव वृद्धिं प्राप्य
अन्नरूपपृथिव्यां यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः
स्थूलशरीरम्। 5.2.49

है अन्नमय
अन्न रस निर्मित
बढ़ता कोश
धरती में विलीन
स्थूल शरीर।

केवल अन्नरस से बनकर, केवल अन्नरस से ही
वृद्धि प्राप्त कर, और अन्नरूप पृथ्वी में जो
विलीन होता है, वह अन्नमय कोश है, जिसे
स्थूल शरीर कहा जाता है।

**That which is born of food, which
grows by food and goes back to earth
which is nature of food, is called the
food sheath- this is gross body.**

प्राणाद्याः पञ्चवायवः वागादीन्द्रियपञ्चकं
प्राणमयः कोशः। 5.3.50

पाँच प्राण व
पाँच कर्मेन्द्रियाँ भी
प्राण कोश हैं।

प्राण और अन्य पाँच वायुओं के साथ-
साथ वाणी आदि पाँच कर्मेन्द्रियों का
समूह, प्राणमय कोश कहलाता है।

The five physiological functions
(pran, Apana, Vyana, Udana and
samana) together with the five
organs of actions (speech, hand,
leg, Anus, rectum) form the
pranamaya kosa, the vital air
sheath.

मनश्च ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं मिलित्वा यो भवति
स मनोमयः कोशः। 5.4.51

संयोगवश
मन व ज्ञानेन्द्रियाँ
मन कोश है।

मन और पाँच ज्ञानेन्द्रियों के संयोग से जो
बनता है, वह मनोमय कोश कहलाता है।

**The mind and the five organs of
perception together form the
mental sheath.**

बुद्धिज्ञानेन्द्रियपञ्चकं मिलित्वा यो भवति
स विज्ञानमयः कोशः। 5.5.52

संयोगवश
बुद्धि व ज्ञानेन्द्रियाँ
विज्ञान कोश।

बुद्धि और पाँच ज्ञानेन्द्रियों के संयोग से जो
बनता है, वह विज्ञानमय कोश कहलाता
है।

**The intellect along with the five
organs of perception together
form the intellectual sheath.**

एवमेव कारणशरीरभूताविद्यास्थमलिनसत्त्वं
प्रियादिवृत्तिसहितं सत् आनन्दमयः कोशः।

5.6.53

अविद्या स्थित
कारण शरीर में
प्रियादि वृत्ति
मलिन सत्त्व गुण
आनन्दमय कोश।

इसी प्रकार, कारण शरीर में स्थित अविद्या
द्वारा दूषित सत्त्व गुण, जिसमें प्रिय आदि
वृत्तियाँ सम्मिलित होती हैं, वह आनन्दमय
कोश है।

**The ignorance and bliss, experienced
by a person during the deep sleep
state, constitute the Anandamaya
kosa. The bliss sheath is same as
causal body.**

मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः मदीयं मनश्च
मदीया बद्धिर्मदीयं ज्ञानमिति स्वेनेव
ज्ञायते तद्यथा मदीयत्वेन ज्ञातं
कटककुण्डल गृहादिकं स्वस्माद्रिन्नंतथा
पञ्चकोशादिकं स्वस्माद्रिन्नं मदीयत्वेन
ज्ञात्मात्मा न भवति। 5.7.54

मेरा शरीर
मेरे प्राण व मन,
स्वयं जानता
मेरी बुद्धि व ज्ञान।
कटक कुण्डल भी
पंच कोश भी
गृह आदि है मेरा।
पर "मैं" आत्मा।
यह नहीं जानता
सब कुछ है मेरा

मेरा शरीर, मेरे प्राण, मेरा मन, मेरी बुद्धि, और मेरी ज्ञान - इन सभी को स्वयं से ज्ञात किया जाता है, जैसे कटक, कुण्डल, गृह आदि को 'मेरा' के रूप में जाना जाता है, वैसे ही पंचकोश और अन्य सब कुछ भी 'मेरा' के रूप में जाना जाता है, परंतु आत्मा 'मेरा' के रूप में नहीं जाना जाता।

Just as bangles, ear rings, houses etc known as mine, are all other than knower, so too, the five sheaths known by self as my body, pranas, mind, intellect and knowledge is other than knower and can't be Atman.

6. आत्मा

The Nature of the Self

सच्चिदानन्दस्वरूपः । 6.1.55

आत्म के गुण
सत्य चित्त आनन्द
यही स्वरूप ।

आत्मा सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप है ।

**Atman is of the nature of Sat-
Chit-Ananda (existence,
knowledge and bliss).**

कालत्रयेऽपि तिष्ठतीति सत्। 6.2.56

सच क्या होता
तीन कालों में स्थित
वही सत्य है।

तीनों कालों में भी जो स्थित रहता है, वह
'सत्' है।

**Which remains unchanged in
three periods (past, present,
future) is Sat.**

ज्ञानस्वरूपः । 6.3.57

**चित्त क्या होता
ज्ञान का स्वरूप है
वही चित्त है ।**

आत्मा ज्ञान का स्वरूप है ।

Absolute knowledge is Chit.

सुखस्वरूपः। 6.4.58

**आनन्द क्या
सुख का स्वरूप है
वही आनन्द।**

आत्मा सुख का स्वरूप है।

Absolute happiness is Anand.

एवं सच्चिदानन्दस्वरूपं स्वात्मानं
विजानीयात्। 6.5.59

जानो आत्मा को
सच्चिदानन्दरूप
यही स्वरूप।

इस प्रकार, व्यक्ति को अपने आत्मा को
सच्चिदानन्द स्वरूप के रूप में जानना
चाहिए।

**Thus one should know oneself to
be of the nature of Absolute
Existence-Knowledge-Bliss.**

7. जगत व माया

The Universe & Maya

अथ चतुर्विंशतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारं वक्ष्यामः।

7.1.60

अब व्याख्या हो
चौबीस तत्त्व ज्ञान
उत्पत्ति कैसे।

अब हम चौबीस तत्त्वों के उत्पत्ति के
तरीके को व्याख्यायित करेंगे।

**Now we shall explain the
evolution of the 24 tattvas.**

ब्रह्माश्रया सत्वरजस्तमोगुणात्मिका माया
अस्ति। 7.2.61

ब्रह्म आश्रय
सत्त्व रज तमस
माया में गुण।

ब्रह्म के आश्रय में सत्त्व, रजस, और तमस
- इन तीन गुणों से युक्त माया मौजूद है।

Depending on Brahman for its
existence is MAYA. It is of nature
of three Gunas. Satva, Rajas and
Tamas.

तत आकाशः संभूतः । 7.3.62

**माया से हुई
आकाश की उत्पत्ति
महाभूत है।**

उससे आकाश की उत्पत्ति हुई।

Akasa is born out of maya.

आकाशाद् वायुः। 7.4.63

वायु उत्पत्ति
आकाश से हुई है
महाभूत है।

आकाश से वायु।

From Akasa, Air is created.

वायोस्तेजः। 7.5.64

**वायु से होता
अग्नि का उदगम
महाभूत है।**

वायु से अग्नि।

From Air, fire is created.

तेजस आपः। 7.6.65

**अग्नि से होता
जल का उदगम
महाभूत है।**

अग्नि से जल।

From fire, water is created.

अभ्दयः पृथिवी। 7.7.66

**जल से होता
पृथ्वी की उत्पत्ति
महाभूत है।**

जल से पृथ्वी।

From water, the earth is created.

एतेषां पञ्चत्वानां मध्ये आकाशस्य
सात्विकांशात् श्रोत्रेन्द्रियं संभूतम्। 7.8.67

पाँच तत्व में
नभ सत्व अंश से
कान उत्पत्ति।

इन पांच तत्वों में, आकाश के सात्विक
अंश से श्रोत्रेन्द्रिय (कान) की उत्पत्ति हुई।

**From Satvic aspect of space, ear is
evolved, the organ of hearing.**

वायोः सात्विकांशात् त्वगिन्द्रियं संभूतम्।

7.9.68

पाँच तत्व में
वायु सत्व अंश से
त्वचा उत्पत्ति।

वायु के सात्विक अंश से त्वचाइंद्रिय
(स्पर्श संवेदन) की उत्पत्ति हुई।

**From the satvic aspect of air, is
evolved the skin, the organ of
touch.**

अग्नेःसात्विकंशात् चक्षुरिन्द्रियं संभूतम्।

7.10.69

पाँच तत्व में
अग्नि सत्व अंश से
चक्षु उत्पत्ति।

अग्नि के सात्विक अंश से चक्षुरिन्द्रिय
(आँख) की उत्पत्ति हुई।

**From the satvic aspect of fire, is
evolved the eye, the organ of
seeing.**

जलस्य सात्विकांशात् रसनेन्द्रियं
संभूतम्। 7.11.70

पाँच तत्व में
जल सत्व अंश से
रस का स्वाद।

जल के सात्विक अंश से रसनेन्द्रिय
(जीभ) की उत्पत्ति हुई।

**From the satvic aspect of water,
the tongue is evolved, the organ
of taste.**

पृथिव्याः सात्विकांशात् घ्राणेन्द्रियं
संभूतम्। 7.12.71

पाँच तत्व में
पृथ्वी सत्व अंश से
नाक उत्पत्ति।

पृथ्वी के सात्विक अंश से घ्राणेन्द्रिय
(नाक) की उत्पत्ति हुई।

**From the satvic aspect of earth,
the nose is evolved, the organ of
smell.**

एतेषां पञ्चतत्वानां समष्टिसात्विकांशात्
मनोबुद्ध्यहंकार चित्तान्तः करणानि
संभूतानि। 7.13.72

अन्तःकरण
मन बुद्धि व चित्त
अहंकार भी
पाँच तत्व से बना
सामूहिक सत्व से।

इन पांच तत्त्वों के सामूहिक सात्विक
अंश से मन, बुद्धि, अहंकार, और चित्त ये
अंतःकरण उत्पन्न हुए।

From the total satvic content of
these five elements the
Antahkaran (Mann, Buddhi, Chitta
and Ahamkar) is formed.

संकल्पविकल्पात्मकं मनः। 7.14.73

**मन कैसा है
संकल्प व विकल्प
स्वभाव लिए।**

**संकल्प और विकल्प के स्वभाव वाला
मन।**

**Manas is of the nature of
indecisions or doubts.**

निश्चयात्मिका बुद्धिः। 7.15.74

बुद्ध कैसी है
निर्णय करती है
निश्चयात्मक।

निश्चय की प्रक्रिया वाली बुद्धि।

Intellect is decisive.

अहंकर्ता अहंकारः। 7.16.75

**मैं ही कर्ता हूँ
अहंकार भावना
स्व पहचानों।**

मैं करता हूँ' की भावना वाला अहंकार।

Sense of doer and identity is ego.

चिन्तनकर्तृ चित्तम्। 7.17.76

चित्त को जाने
वह चिंतन करे
मंथन करे।

चिंतन करने वाली चित्त।

The thinking faculty is the chitta.

मनसो देवता चन्द्रमाः। 7.18.77

**चन्द्रमा जानो
मन का देवता है
मन चन्द्र सा।**

मन का देवता चंद्रमा है।

**The presiding deity of the mind is
the moon.**

बुद्धे ब्रह्मा । 7.19.78

**ब्रह्मा को जानो
बुद्धि का देवता है
बुद्धि ब्रह्मा सी ।**

बुद्ध का देवता ब्रह्मा है ।

**The presiding deity of intellect is
Brahma.**

अहंकारस्य रुद्रः। 7.20.79

**रुद्र को जानो
अहंकार देवता
अहं रुद्र का।**

अहंकार का देवता रुद्र है।

Presiding deity of ego is Rudra.

चित्तस्य वासुदेवः। 7.21.80

**वासुदेव को
चित्त देवता जानो
चित्त विष्णु का।**

चित्त का देवता विष्णु है।

**The presiding deity of Chitta is
Vasudeva.**

एतेषां पञ्चतत्त्वानाम् मध्ये आकाशस्य
राजसांशात् वागिन्द्रियं संभूतम्।

7.22.81

पाँच तत्त्व में
आकाश के रज से
वाणी उत्पत्ति।

इन पांच तत्त्वों में, आकाश के राजस
अंश से वाक् इंद्रिय (वाणी) की उत्पत्ति
हुई।

Among these five elements, the
organ of speech is formed from
the Rajas aspect of space.

वायोः राजसांशात् पाणीन्द्रियं संभूतम्।
7.23.82

पाँच तत्त्व में
वायु के राजस से
हाथ उत्पत्ति।

वायु के राजस अंश से पाणि इंद्रिय (हाथ)
की उत्पत्ति हुई।

Hand is formed from the rajas
aspect of air.

वन्हेः राजसांशात् पादेन्द्रियं संभूतम्।
7.24.83

पाँच तत्त्व में
अग्नि के राजस से
पैर उत्पत्ति।

अग्नि के राजस अंश से पाद इंद्रिय (पैर)
की उत्पत्ति हुई।

**Legs are formed from the rajas
aspect of fire.**

जलस्य राजसांशात् उपस्थेन्द्रियं संभूतम्।
7.25.84

पाँच तत्त्व में
जल के राजस से
जननांग है।

जल के राजस अंश से उपस्थ इंद्रिय
(जननांग) की उत्पत्ति हुई।

**Genitals are formed from the
rajas aspect of water.**

पृथिव्या राजसांशात् गुदेन्द्रियं संभूतम्।
7.26.85

पाँच तत्त्व में
पृथ्वी के राजस से
गुदा उत्पत्ति।

पृथ्वी के राजस अंश से गुद इंद्रिय (मल
त्याग करने वाला अंग) की उत्पत्ति हुई।

**Anus is formed from the rajas
aspect of earth.**

एतेषां समष्टिराजसांशात् पञ्चप्राणाः
संभूता। 7.27.86

पाँच तत्त्व के
सामूहिक रज से
प्राण उत्पत्ति।

इनके सामूहिक राजस अंश से पाँच
प्राणों की उत्पत्ति हुई।

**Five vital pran are born from the
rajas aspect of all five elements.**

एतेषां पञ्चतत्त्वानां तामसांशात्
पञ्चीकृतपञ्चतत्त्वानि भवन्ति। 7.28.87

पाँच तत्त्व से
पंजीकृत तत्त्व हो
तम अंश से।

इन पांच तत्त्वों के तामस अंश से पंचीकृत
पांच तत्त्वों का निर्माण होता है।

**From the Tamas aspect of these
five subtle elements, the
grossified five elements are born.**

8. जीव और ईश्वर

Self & Lord

स्थूलशरीराभिमानि जीवनामकं ब्रह्मप्रतिबिंबं
भवति। स एव जीवः प्रकृत्या स्वस्मात् ईश्वरं
भिन्नत्वेन जानाति। 8.1.88

स्थूल तन का
रखता अभिमान
भिन्न ईश्वर।

स्थूल शरीर के प्रति अभिमान रखने वाला,
जीव नामक ब्रह्म का प्रतिबिंब होता है। यही
जीव प्रकृति द्वारा अपने आप को ईश्वर से
भिन्न मानता है।

**The reflection of Brahman in
sukshma sharira which identifies
itself with gross body is called Jiva.
This Jiva by nature of ignorance
takes Isvara to be different from
himself.**

अविद्योपाधिः सन् आत्मा जीव इत्युच्यते।
8.2.89

आत्मा जब हो
अज्ञान से प्रेरित
जीव कहावे।

अविद्या के उपाधि के साथ, आत्मा को जीव
कहा जाता है।

**The Aatma conditioned by the
ignorance is called Jiva.**

मायोपाधिः सन् ईश्वर इत्युच्यते। 8.3.90

**ब्रह्म हो जब
माया से लथपथ
कहे ईश्वर ।**

**माया के उपाधि के साथ, ईश्वर कहा
जाता है।**

**The awareness conditioned by
maya is known as Isvara.**

एवं उपाधिभेदात् जीवेश्वरभेददृष्टिः
यावत्पर्यन्तं तिष्ठति तावत्पर्यन्तं
जन्ममरणादिरूपसंसारो न निवर्तते। 8.4.91

उपाधि करे
जीव ईश्वर भेद
संसार चक्र।

इस प्रकार, उपाधियों के भेद से जीव और
ईश्वर में भेद का दृष्टिकोण जब तक बना
रहता है, तब तक जन्म, मरण आदि के रूप
में संसार का चक्र नहीं रुकता।

So long as the notion which is due
to difference in the conditioning
that jiva and isvara are different
remains, until such time there is no
redemption from Samsara which is
of the form of repeated birth, death
etc.

तस्मात्कारणान्न जीवेश्वरयोर्भेदबुद्धिः
स्वीकार्यः। 8.5.92

न स्वीकार
जीव ईश्वर भेद
बुद्धि कारण।

इसलिए, जीव और ईश्वर में भेद की बुद्धि को
कारण के आधार पर स्वीकार नहीं किया
जाना चाहिए।

Due to that reason, the notion that
“Jiva is different from Isvara” should
not be accepted.

9. तत् त्वम् असि TAT TWAMASI

ननु साहंकारस्य किञ्चिज्ज्ञस्य जीवस्य
निरहंकारस्य सर्वज्ञस्य ईश्वरस्य तत्त्वमसीति
महावाक्यात् कथमभेदबुद्धिः स्यादुभयोः
विरुद्धधरामाक्रान्तत्वात्। 9.1.93

अज्ञानी जीव
अहंकार से युक्त
कैसे जानेगा?

निरहंकार
सर्वज्ञ ईश्वर को
भेद बुद्धि से

तत्त्वमसि को
महावाक्य समझो
सर्वज्ञ कहे।

लेकिन, अहंकार से युक्त और कुछ ही जानने वाले जीव और निरहंकार और सर्वज्ञ ईश्वर के बीच 'तत्त्वमसि' इस महावाक्य से अभेद की बुद्धि कैसे हो सकती है, जब दोनों के धर्म विरोधी प्रतीत होते हैं?

But the Jiva is deluded with ego and his knowledge is limited whereas Isvara is without ego and is omniscient. Then how can there be identity, as stated in the Mahavakya TAT TWAMASI between these two who are possessed of contradictory characteristics?

इति चेन्न। स्थूलसूक्ष्मशरीराभिमानी
त्वंपदवाच्यार्थः। उपाधिविनिर्मुक्तं
समाधिदशासंपन्नं शुद्धं चैतन्यं
त्वंपदलक्ष्यार्थः। 9.2.94

ऐसा नहीं है
त्वं पद वाच्यार्थ है
अभिमान से
स्थूल सूक्ष्म शरीर
शुद्ध त्वं लक्ष्यार्थ है।

ऐसा नहीं है। 'त्वं' पद का वाच्यार्थ है वह
जो स्थूल और सूक्ष्म शरीर के अभिमान
से युक्त है। उपाधियों से मुक्त, समाधि
दशा में स्थित और शुद्ध चैतन्य 'त्वं' पद
का लक्ष्यार्थ है।

**If the doubt is so, no it's not so.
The literal meaning of the word
thou is the one who identifies
himself with gross and subtle
bodies. The implied meaning of
the word thou is pure awareness
which is free from all
conditionings.**

एवं सर्वज्ञत्वादिविशिष्ट ईश्वरः
तत्पदवाच्यार्थः। 9.3.95

सर्वज्ञता है
विशेषण ईश्वर
तत् वाच्यार्थ है।

इस प्रकार, सर्वज्ञता आदि विशेषणों से
युक्त ईश्वर 'तत्' पद का वाच्यार्थ है।

**So also the literal meaning of the
word “That” is the Isvara having
omniscient etc.**

उपाधिशून्यं शुद्धचैतन्यं तत्पदलक्ष्यार्थः ।

9.4.96

शुद्ध चैतन्य
उपाधि रहित है
तत् लक्ष्यार्थ है।

उपाधियों से रहित शुद्ध चैतन्य 'तत्' पद
का लक्ष्यार्थ है।

**The implied meaning of the word
“That” is the pure awareness free
of conditionings.**

एवं च जीवेश्वरयो चैतन्यरूपेणाऽभेदे
बाधकाभावः। 9.5.97

जीव ईश्वर
चैतन्य से अभेद
बाधक नहीं।

इस प्रकार, जीव और ईश्वर के बीच
चैतन्य स्वरूप में अभेद है, और इस
अभेद को नकारने वाला कोई भी बाधक
नहीं है।

**Thus there is no contradiction
regarding the identity between
Jeeva and Isvara from the stand
point of awareness.**

10. जीवन मुक्त Liberated While Living

एवं च वेदान्तवाक्यैः सदगुरुरूपदेशेन च
सर्वेष्वपि भूतेषु येषां ब्रह्मबुद्धिरुत्पन्ना ते
जीवन्मुक्ताः इत्यर्थः। 10.1.98

वेदान्त वाक्य
सद्गुरु उपदेश
जीवन मुक्त
सब भूतों में हुई
ब्रह्म बुद्धि उत्पन्न।

इस प्रकार, वेदांत के वचनों और सद्गुरु
के उपदेश के माध्यम से, जिनके सभी
भूतों में ब्रह्म की बुद्धि उत्पन्न हो गई है, वे
जीवन्मुक्त कहलाते हैं, इसका यही अर्थ
है।

Thus as per Vedanta imparted by competent teacher, those in whom the knowledge of Brahman in all beings is born, they are the Jivanmuktas. (Liberated even while living).

यथा देहोऽहं पुरुषोऽहं ब्राह्मणोऽहं
शूद्रोऽहमस्मीति दृढनिश्चयस्तथा नाहं
ब्राह्मणः न शूद्रः न पुरुषः किन्तु असंगः
सच्चिदानन्दस्वरूपः प्रकाशरूपः
सर्वान्तर्यामी चिदाकाशरूपोऽस्मीति
दृढनिश्चयरूपोऽपरोक्षज्ञानवान्
जीवन्मुक्तः। 10.2.99

ज्युँ कोई कहे
दृढ़ निश्चय साथ
मैं शरीर हूँ

मैं पुरुष हूँ
मैं ब्राह्मण या शूद्र
उसी प्रकार

दृढ़ निश्चय
मैं ब्राह्मण नहीं हूँ

न पुरुष न शूद्र

लेकिन मैं हूँ
असंग सदानंद
प्रकाश *रूप* ।

अंतर्यामी हूँ
चिदाकाश *स्वरूप*
जीवन मुक्त ।

जैसे कोई दृढ़ निश्चय से कहता है कि 'मैं शरीर हूँ', 'मैं पुरुष हूँ', 'मैं ब्राह्मण हूँ', 'मैं शूद्र हूँ', उसी प्रकार, जो दृढ़ निश्चय के साथ कहता है कि 'मैं ब्राह्मण नहीं हूँ', 'मैं शूद्र नहीं हूँ', 'मैं पुरुष नहीं हूँ', बल्कि 'मैं असंग, सच्चिदानंद स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, सर्वांतर्यामी, चिदाकाश स्वरूप

हूँ', वह अपरोक्षज्ञान वाला जीवनमुक्त है।

Just one has firm belief that “I am the body”, “I am a man”, “i am a Brahmin”, “I am a sudra” so also “I am not the body”, “I am not a man”, “I am not a Brahmin”, “I am not a sudra” but I am unattached, of the nature Satchitananda, effulgent, the indweller of all, the formless awareness, thus one having this firmly ascertained aparoksha jnana is the JIVANMUKTA.

ब्रह्मैवाहमस्मीत्यपरोक्षज्ञानेन
निखिलकर्मबन्धविनिर्मुक्तः स्यात्।
10.3.100

ब्रह्म ही मैं हूँ
अपरोक्ष ज्ञान से
बंधन मुक्त।

“ब्रह्म ही मैं हूँ” - इस अपरोक्ष ज्ञान से
व्यक्ति सभी कर्म बंधनों से मुक्त हो
जाता है।

**By the Aparoksha Jnana that “I
am Brahman” one becomes free
from bondage of all the Karmas.**

11. कर्म Actions

कर्माणि कतिविधानि सन्तीति चेत्
आगामिसञ्चितप्रारब्धभेदेन त्रिविधानि
सन्ति। 11.1.101

कर्मों के भेद
आगामी व संचित
प्रारब्ध भी है।

यदि आप पूछें कि कर्म कितने प्रकार के होते हैं, तो आगामी, संचित, और प्रारब्ध इन भेदों के आधार पर कर्म तीन प्रकार के होते हैं।

**How many kinds of Karmas are
theee? There are theee kinds.
Aagami, Sanchit & Prarabdh.**

ज्ञानोत्पत्त्यंतरं ज्ञानिदेहकृतं पुण्यपापरूपं कर्म
यदस्ति तदागामीत्यभिधीयते। 11.2.102

ज्ञान उत्पन्न
ज्ञानी पुण्य व पाप
आगामी कहा।

ज्ञानोत्पत्ति के बाद ज्ञानी द्वारा किए गए पुण्य
और पाप रूपी कर्म, जो अस्तित्व में हैं, उन्हें
आगामी कहा जाता है।

**The result of actions good or bad
performed through the body of
jnani after the dawn of knowledge is
known as Agami.**

अनन्तकोटिजन्मनां बीजभूतं सत्
यत्कर्मजातं पूर्वार्जितं तिष्ठति तत् सञ्चितं
ज्ञेयम्। 11.3.103

अर्जित कर्म
अनन्त कोटि जन्म
संचित कहा।

अनन्त कोटि जन्मों में अर्जित और बीज रूप
में स्थित कर्म जो पूर्व में अर्जित किए गए हैं,
उन्हें संचित कर्म के रूप में जाना जाता है।

The result of actions performed in
the previous births which are in the
seed form to give rise to endless
crores of births in future is called
Sanchita (accumulated) Karma.

इदं शरीरमुत्पाद्य इह लोके एवं सुखदुःखादिप्रदं
यत्कर्म तत्प्रारब्धं भोगेन नष्टं भवति
प्रारब्धकर्मणां भोगादेव क्षय इति। 11.4.104

प्रारब्ध कर्म
शरीर सुख दुख
भोग से नष्ट।

इस शरीर को उत्पन्न करके, इस लोक में सुख-
दुःख आदि प्रदान करने वाली कर्म, जिसे भोग
के माध्यम से नष्ट किया जाता है, वह प्रारब्ध
कर्म है। प्रारब्ध कर्मों का क्षय केवल भोग से ही
होता है।

Having given birth to this body, the
actions which give results in this very
world, in the form of happiness or
misery, and which can be destroyed
only by enjoying or suffering them is
called Prarabdh karma.

12. कर्म बंधन से मुक्ति

Freedom From Bondage

सञ्चितं कर्म ब्रह्मैवाहमिति निश्चयात्मकज्ञानेन
नश्यति। 12.1.105

ब्रह्म व अहं
ज्ञान से नष्ट होते
संचित कर्म।

संचित कर्म 'ब्रह्म एव अहम्' इति
निश्चयात्मक ज्ञान से नष्ट हो जाता है।

**The Sanchit karma is destroyed by
the knowledge that "I am Brahman".**

आगामि कराम अपि ज्ञानेन नश्यति किंच
आगामि कर्मणां नलिनीदलगतजलवत्
ज्ञानिनां सम्बन्धो नास्ति। 12.2.106

आगामी नष्ट
ज्ञानी के ज्ञान से हो
ज्ञानी न चिंता
ज्यूँ कमल के पत्ते
पर पड़ा हो जल।

आगामी कर्म भी ज्ञान से नष्ट हो जाता है,
लेकिन आगामी कर्मों का ज्ञानियों से
कोई संबंध नहीं होता, जैसे कमल के पत्ते
पर पड़े जल का।

The Agami karma is also destroyed by Jnana. Jnani is not affected by it just as a lotus leaf is not affected by the water on it.

किंच ये ज्ञानिनं स्तुवन्ति भजन्ति
अर्चयन्ति तान्प्रति ज्ञानिकृतं आगामि
पुण्यं गच्छति। 12.3.107

ज्ञानी की भक्ति
वो लेता है ज्ञानी के
आगामी पुण्य।

और जो लोग ज्ञानी की स्तुति करते हैं,
उनकी भक्ति करते हैं, और उनकी
आराधना करते हैं, उनके प्रति ज्ञानी द्वारा
की गई आगामी पुण्य कर्म चली जाती है।

**Further those who praise, worship
and adore the Jnani, to them go
the results of good actions done
by Jnani.**

ये ज्ञानिनं निन्दन्ति द्विषन्ति दुःखप्रदानं
कुर्वन्ति तान्प्रति ज्ञानि कृतं सर्वमागामि
क्रियमाणं यदवाच्यं कर्म पापात्मकं
तद्रच्छति। 12.4.108

ज्ञानी की निंदा
वो लेता है ज्ञानी के
आगामी पाप।

जो लोग ज्ञानी की निंदा करते हैं, उनसे
द्वेष रखते हैं, और उन्हें दुःख पहुँचाते हैं,
उनके प्रति ज्ञानी द्वारा किया गया सभी
आगामी कर्म, जो कहने योग्य नहीं है,
और पापात्मक है, वह चला जाता है।

Those who abuse, hate or cause
pain or sorrow to Jnani- to them
go the results of the sinful actions
done by the Jnani.

तथा चात्मवित्संसारं तीर्त्वा
ब्रह्मानन्दमिहैव प्राप्नोति। 12.5.109

संसार पार
ब्रह्मानन्द को प्राप्त
आत्मज्ञानी हो।

इस प्रकार, आत्मज्ञानी संसार को पार
करके इसी जीवन में ब्रह्मानन्द को प्राप्त
करता है।

Thus the knower of the self,
having crossed the samsara,
attains the supreme bliss here
itself.

तरति शोकमात्मवित् इति श्रुतेः।

12.6.110

शोक को पार
श्रुति कथन यह
आत्म ज्ञानी हो।

“आत्मज्ञानी शोक को पार कर जाता है”
- ऐसा श्रुति से ज्ञात होता है।

**The Sruti affirms: The knower of
the self goes beyond all sorrows.**

तनुं त्यजुत वा काश्यां श्वपचस्य गृहेऽथ
वा । ज्ञानसंप्राप्तिसमये मुक्ताऽसौ
विगताशयः । इति स्मृतेश्च । 12.7.111

शरीर त्याग
काशी या चांडाल के
ज्ञानी मुक्त हो ।

चाहे शरीर काशी में त्यागा जाए या श्वपच
(चांडाल) के घर में, ज्ञान प्राप्ति के समय,
वह व्यक्ति मुक्त होता है, आशाओं से
रहित होता है - ऐसा स्मृति में कहा गया
है ।

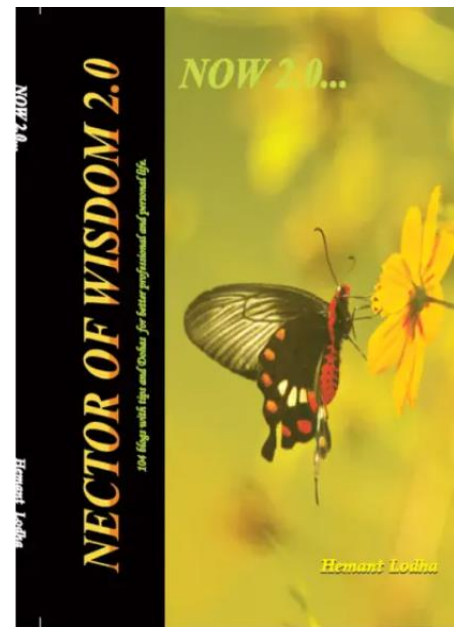
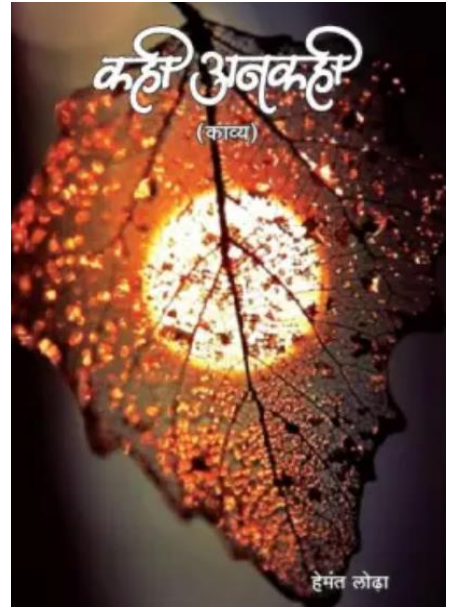
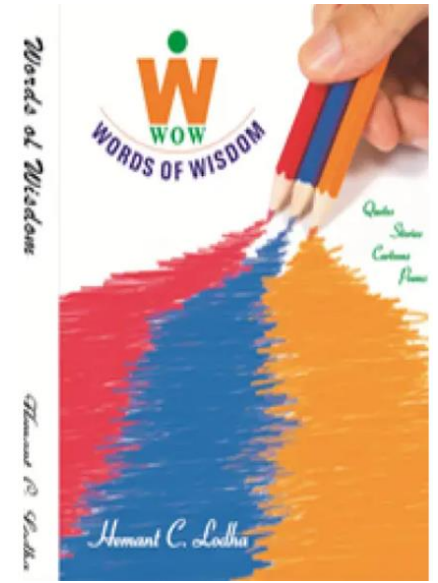
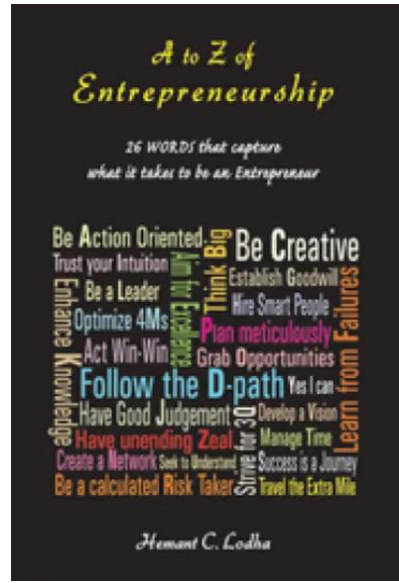
Let the Jnani cast his body in Kasi
or in the house of a dog eater, at
the time of gaining knowledge of
self, he is liberated being freed
from all results of actions. So
assert the Smritis too.

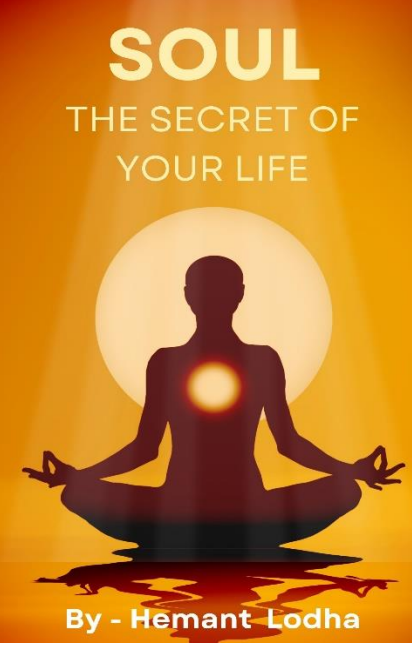
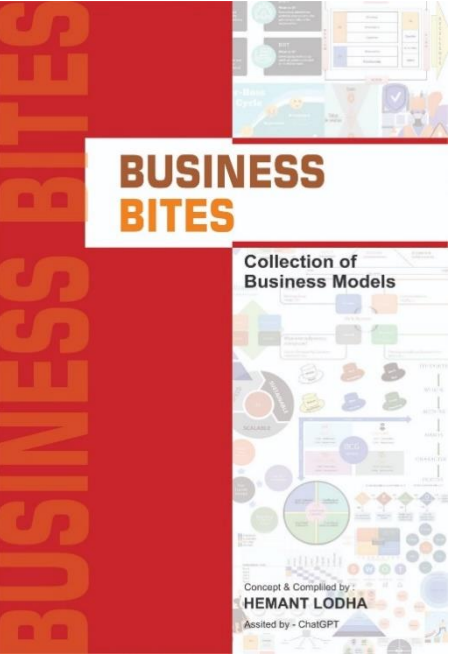
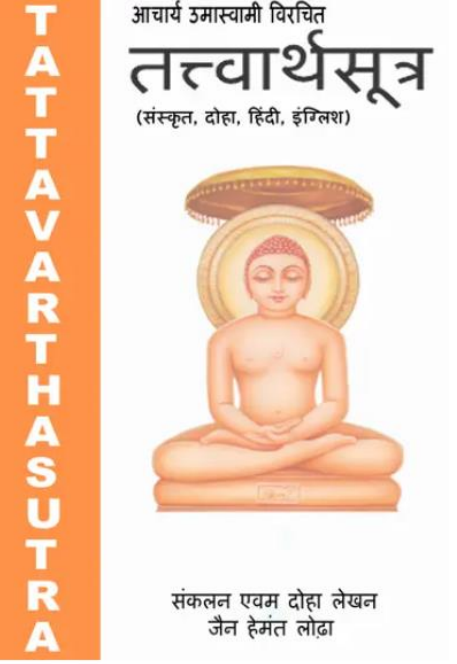
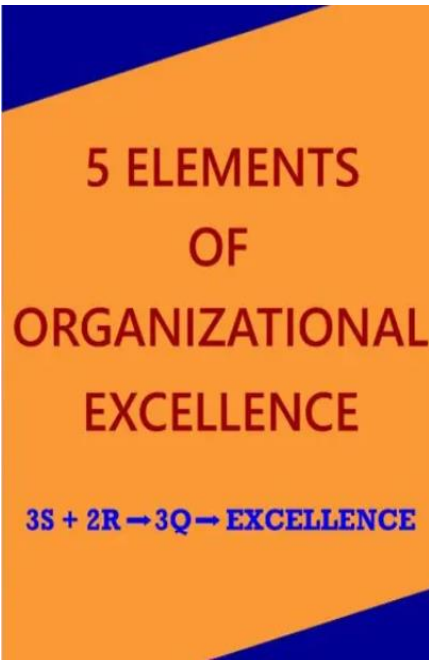
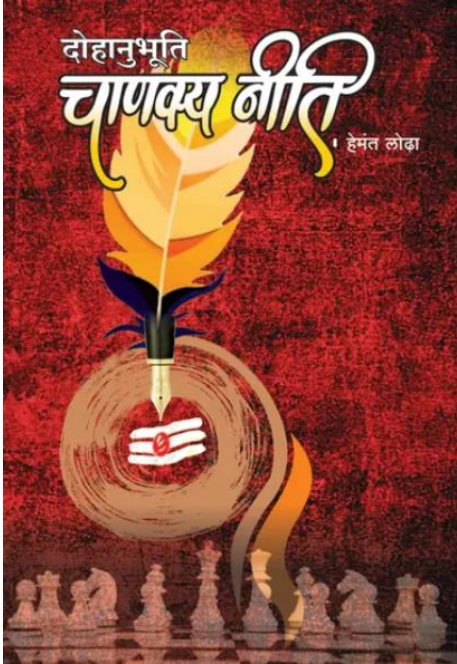
इति तत्त्वबोधप्रकरणं समाप्तम्।

12.8.112

**इस प्रकार, तत्त्वबोध का प्रकरण समाप्त
हुआ।**

Tattvabodh sutra ends here.







CA Hemant Lodha (Jain)

Mr. Hemant Lodha, a chartered accountant by profession is an avid reader whose literary interests include philosophy, spirituality, relationship building, leadership skills & management skills. Born in Jodhpur, to a respected family of limited means, he has been all over the globe before settling in Nagpur in 2002.

He has authored many books such as 'Words of Wisdom', 'Nectar of Wisdom', 'Shrimad Bhagwat Geeta Roopkavita', 'Ashtavakra Mahageeta Roopkavita', 'Kahi Ankahi', 'Samansuttam', 'Chankya Niti' 'A to Z Entrepreneurship' 'A to Z of Leadership' etc.

Being socially active, he is associated with several organizations and has founded "Helplink Charitable Trust" with a motto to LINK THE NOBLE AND THE NEEDY, mainly working in the field of education for deprived children.

He is presently working as a Managing Director of SMS Envocare Limited, a group company of SMS Limited.

He can be easily reached at www.hemantlodha.com